Roll No. .....

एम.ए.एस.ए.-11 (एम.ए. संस्कृत)

द्वितीय वर्ष, सत्र- 2015

एम.ए.एस.ए.–05

गद्य एवं काव्य

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 60

नोट : यह प्रश्न-पत्र साठ (60) अंकों का है जो तीन (03) खंडों क, ख तथा ग में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है।

खण्ड-क

(दीर्घ उत्तरों वाले प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में चार (04) दीर्घ उत्तरों वाले प्रश्न दिये गए हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए पन्द्रह अंक निर्धारित हैं । शिक्षार्थियों को इनमें से केवल दो प्रश्नों के उत्तर देने हैं । (2×15=30)

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए-

(क) नाम्नैव यो निर्भिन्नारातिहृदयो विरचितनारसिंहरूपाडम्बरमेक विक्रमाक्रान्तसकलभुवनतलो विक्रमत्रयायासितं च जहासेव वासुदेवम्। अतिरिचरकाललग्नमतिक्रान्तकुनृपतिसहस्रसंपर्ककलङ्कमिव क्षालयन्ती यस्य विमले कृपाणधाराजले चिरमुवास राजलक्ष्मी:।

(ख) देव द्वारस्थिता सुरलोकमारोहतस्त्रिशङ्कोरिव कुपितशतमखहुंकारनिपातिता राजलक्ष्मी-र्दक्षिणापथादागता चाण्डालकन्यका पञ्जरस्थं शुकमादाय देवं विज्ञापयति। सकलभुवन-तलसर्वरत्नानामुदधिरिवैकभाजनं देवो विहंगम श्चायमाश्चर्यभूतो निखिलभुवनतलरत्नमिति कृत्वा देवपादमूलमादायागताह-मिच्छामि देवदर्शनसुखमनुभवितुमिति। एतदाकर्ण्य देवः प्रमाणम्।

(ग) द्योतितान्तः सभैः कुन्दकुड्मलाग्रदतः स्मितैः।
स्नपितेवाऽभवत्तस्य शुद्धवर्णा सरस्वती।।

(घ) सान्द्रां मुद्रंयच्छतुनन्दकोवः सोल्लासलक्ष्मीप्रतिबिम्बगर्भः।
कुर्वन्नजस्रं यमुनाप्रवाहसलीलराधास्मरणं मुरारेः।।

2. 'बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वं' इस उक्ति की समीक्षा कीजिए।
3. माघ के काव्यगत सौन्दर्य की समीक्षा कीजिए।
4. महाकवि बिल्हण के प्रभात वर्णन पर प्रकाश डालिए।

खण्ड-ख

(लघु उत्तरों वाले प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरों वाले प्रश्न दिये गए हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए पाँच (05) अंक निर्धारित हैं । शिक्षार्थियों को इनमें से केवल चार (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं ।

(4×5=20)

1. कादम्बरी के आधार पर विन्ध्याटवी का वर्णन कीजिए।
2. विक्रमाङ्कदेवचरितं की विशेषताएँ बतलाइए।
3. शिशुपालवध महाकाव्य के द्वितीय सर्ग की विषयवस्तु का प्रतिपादन कीजिए।
4. संस्कृत पद्य साहित्य का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
5. राजा शूद्रक का वैशिष्ट्य प्रतिपादित कीजिए।

6. 'अमुं हि पात्रप्रतिपादनं श्रियः' इस सूक्ति की समीक्षा कीजिए।

7. 'महीयांसः प्रकृत्या मितभाषिणः' इस सूक्ति की विवेचना कीजिए।

8. शिवमहिम्न स्तोत्र के पाठ का महत्व स्पष्ट कीजिए।

खण्ड-ग

(वस्तुनिष्ठ प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ग' में दस (10) वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिये गए हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए एक (01) अंक निर्धारित है। इस खण्ड के सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। (10×1=10)

सही उत्तर चुनिये :

1. कादम्बरी का रचनाकाल है-

   (अ) 7वीं सदी (ब) 8वीं सदी

   (स) 9वीं सदी (द) 10वीं सदी

2. कादम्बरी में मंत्री शुकनास ने उपदेश दिया है-

   (अ) चन्द्रापीड को (ब) तारापीड को

   (स) वैशम्पायन को (द) पुण्डरीक को

3. शिशुपालवध में कितने सर्ग हैं-

   (अ) 10 (ब) 15

   (स) 20 (द) 18

4. पुण्डरीक का अपर नाम है-

   (अ) चन्द्रापीड (ब) शुकनास

   (स) वैशम्पायन (द) हारीत

5. विक्रमाङ्कदेवचरितं है-

(अ) गद्यकाव्य (ब) महाकाव्य

(स) आख्यायिका (द) व्यायोग

6. कादम्बरी में प्रमुख रस है-

(अ) वीर (ब) करुणा

(स) शृंगार (द) हास्य

7. शिशुपालवधं का आधारभूत महाभारत का सर्ग है-

(अ) भीष्म (ब) सभा

(स) विराट (द) शान्ति

8. विक्रमाङ्कदेवचरितम् में किस वंश का वर्णन है?

(अ) चेदी (ब) मौर्य

(स) यदु (द) चालुक्य

9. शिवमहिम्न स्तोत्र में शिव की महिमा कितने श्लोकों में की गई है?

(अ) 18 (ब) 19

(स) 20 (द) 21

10. प्रभातवर्णन विक्रमाङ्कदेवचरितम् के किस सर्ग में है?

(अ) 2 (ब) 3

(स) 4 (द) 5